बी.ए.-भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
पेपर-7
'पश्चिमी हिन्दी'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालिज
डुमरॉव

पश्चिमी हिन्दी -

पश्चिमी हिन्दी की पाँच प्रमुख बोलियाँ हैं- ब्रजभाषा, खड़ी-बोली, बाँगरू, कन्नौज और बुन्देली।

ब्रजभाषा :-

ब्रजमाषा का महत्व साहित्यिक दृष्टि से बहुत बड़ा है। मध्ययुग में साहित्य-भाषा के रूप में उसका प्रचार गुजरात से लेकर बंगाल तक था। ब्रजभाषा मथुरा, अलीगढ़, आगरा में बोली जाती है। ब्रजभाषा के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में (ग्वालियर, भरतपुर की ओर) राजस्थानी और बुन्देली का प्रभाव देखा जाता है।

खड़ी-बोली -

खड़ी बोली मुख्यत: बिजनौर, मुरादाबाद, मुज़फ़्फ़रनगर, सहारनपुर, देहरादून की भाषा है। अम्बला और पटियाला के दक्षिणी भाग भी खड़ी-बोली की सीमा में पड़ते है। साहित्यक दृष्टि से खड़ी-बोली के दो रूप हो गये हैं- हिन्दी और उर्दू। हिन्दी में तत्सम शब्दों की प्रधानता है और उर्दू में अरबी-फ़ारसी शब्दों की। इन भाषाओं का भेद लिपि के कारण भी है। हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी

जाती है और उर्दू फारसी लिपि में। साहित्य और लिपि का अन्तर मिट जाने पर हिन्दी - उर्दू में कोई भेद नहीं रहता। इसलिए कुछ लोग उर्दू को हिन्दी की एक शैली - मात्र मानते हैं। खड़ी - बोली का आश्चर्यजनक प्रसार हुआ है और आज वह सम्पूर्ण भारत की राजभाषा और सम्पर्कभाषा के रूप में गृहीत है।

बाँगरू -

बाँगरू दिल्ली, रोहतक, करनाल, हिसार, पटियाला, नाभा में बोली जाती है। राजस्थान और पंजाब की सीमा समीप होने के कारण राजस्थानी और पंजाबी का बाँगरू पर प्रभाव पाया जाता है। बाँगरू का दूसरा नाम हरियाणी भी है। वस्तुतः यह खड़ी - बोली की ही एक विभाषा है।

कन्नौजी -

कन्नौजी का क्षेत्र अवधी और ब्रजभाषा के मध्य में पड़ता है। यह मुख्यतः फर्रुखाबाद में बोली जाती है, किन्तु उत्तर में पीलीभीत, शाहजहाँपुर और दक्षिण में इटावा और कानपुर के पश्चिमी भाग तक इसका प्रसार पाया जाता है।

जिस प्रकार हरियाणी खड़ी- बोली की विभाषा है, उसी प्रकार कन्नोजी भी ब्रजभाषा की विभाषा है।

बुन्देली -

बुन्देली का क्षेत्र झाँसी, हमीर पुर, जालौन, ग्वालियर, भोपाल, सागर, ओरछा, और नरसिंहपुर है। मिश्रित रूप में इसका प्रयोग पन्ना, चरखारी, दतिया, दमोह, हिन्दवाड़ा आदि के कुछ भागों में भी पाया जाता है। बुन्देली और ब्रजभाषा में अत्यधिक साम्य है। ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुन्देली को एक ही बोली के विभिन्न रूप कह सकते हैं।

राजस्थानी -

राजस्थानी के अन्तर्गत चार बोलियाँ है- मेवाती, मारवाड़ी, मालवी और जयपुरी।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज
डुमराँव - बक्सर
(बिहार)